24

''बुरा बर्ताव सहने को चुनना''

(11:23-29)

हम सब को निर्णय लेने पड़ते हैं। कुछ निर्णय तुलनात्मक रूप में अनावश्यक होते हैं, जबकि कुछ निर्णय बड़े होते हैं। मसीही लोग, जिनके नाम इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई, निर्णय लेने की कशमकश में थे कि मसीहियत के साथ बने रहें या यहूदी मत में लौट जाएं। लेखक ने उन्हें उस आदमी का स्मरण कराया जिसे वे सराहते थे यानी एक ऐसे आदमी का, जिसे उनकी तरह परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने का कठिन निर्णय लेना पड़ा था।

प्रभु की बात मानें कि मूसा की पसन्द

पहली घटनाएं

फिरौन के आदेश के बावजूद (निर्गमन 1), मूसा के माता-पिता ने उसकी हत्या नहीं की थी, बल्कि उसे छिपा दिया (निर्गमन 2:1, 2; इब्रानियों 11:23)। उसकी माता ने अन्त में बैंत की एक जलरोधी टोकरी में डालकर उसे नील नदी पर रख दिया, जहां वह फिरौन की बेटी को मिल गया (देखें निर्गमन 2:3-10)। उसका पालन-पोषण फिरौन के महल की भव्यता में हुआ (देखें प्रेरितों 7:22)।

निर्णय लेने का समय

मूसा जब बड़ा हुआ तो उसके लिए निर्णय लेने का समय आ गया। धरातल पर ऐसा लगता नहीं था कि निर्णय लेना इतना कठिन है। उसके पास मिस्र की सारी दौलत और सामर्थ हो सकती थी। या कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं से कम को चुन सकता था; क्योंकि वह विकल्प दासों की जाति इस्राएलियों के लिए था। इब्रानियों 11:24-27 हमें मूसा के चौंकाने वाले निर्णय के बारे में बताता है। तीन महत्वपूर्ण शब्दों पर ध्यान दें:

''इनकार किया'': किसी स्थान पर, किसी समय पर मूसा ने मिस्र को, फिरौन को, और फिरौन की बेटी को ''न'' कही जो उसकी मां थी।

''चुनना'': मूसा ने सुख की जगह बुरे बर्ताव को, खज़ाने की जगह अपमान को चुना।

''छोड़ दिया'': KJV ''त्याग दिया''[1] (आयत 27)। मूसा के निर्णय में निश्चयात्मकता थी। हम कह सकते हैं कि ''उसने अपने पीछे के पुलों को जला दिया।''

मूसा की पसन्द ''विश्वास से'' की गई

कोई ऐसी पसन्द कैसे चुन सकता है, जैसी मूसा ने चुनी? यह पसन्द विश्वास से की गई

पसन्द थी।

(1) यह वह विश्वास था, जिसका आरम्भ घर से हुआ था। यह न भूलें कि मूसा की धाई उनकी अपनी मां ही थी (आयत 23)।

(2) यह विश्वास था कि परमेश्वर को अपने लोगों में ढूंढ़ना (आयत 24)। किसी ने कहा कि ''मूसा ने प्रेम करने वाले मिस्रियों से बढ़कर चिढ़ाने वाले इस्राएलियों को चुना।'' बहुत से लोग धर्म में गलत बातों की तलाश में हैं; उन्हें उस स्थान की तलाश करनी चाहिए जहां परमेश्वर और उसके लोग हैं।

(3) विश्वास में ही इस जीवन के आकर्षणों की वास्तविकता देखना (आयत 25क)। सांसारिक सुख ''बीतते जाते'' हैं। मूसा ने जीवन के ''लम्बे विचार'' को देखा। हमें वही बात सीखने की आवश्यकता है।

(4) विश्वासयोग्य लोगों को प्रतिफल देने के लिए परमेश्वर में भरोसा दिखाएं (आयत 26)।

(5) यह परमेश्वर और उसकी योजना में विश्वास (आयत 27) और ऐसा विश्वास था जिसे विजय का भरोसा था (आयत 28)। मूसा ने जब ''फसह को मनाया'' तो उसने इस्राएलियों को बताया कि यह पर्व सदा के लिए मनाया जाएगा (देखें निर्गमन 12:24)। इसमें पहले से मान लिया गया कि वे मिस्र में से सुरक्षित निकल जाएंगे।

(6) अन्त में विश्वास ने ही दूसरों में विश्वास जगाया (आयत 29)।

सारांश

क्या मूसा ने सही पसन्द चुनी? प्राचीन फिरौनों के खराब हो रहे अवशेषों को ढूंढ़ने के लिए आपको धूल भरे अजायब घरों में जाना होगा; परन्तु मूसा करोड़ों लोगों के दिलों में रहता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वह परमेश्वर की उपस्थिति में रहता है।

आज बहुत से लोग अपने जीवनों के चौराहों पर हैं। क्या आपके लिए निर्णय लेने का समय यही है? यदि हां तो मेरी प्रार्थना है कि आप सही निर्णय लेंगे ताकि आप पृथ्वी के लाभों पर ध्यान देने के बजाय दूर तक देख पाएं।

टिप्पणी

[1]यूनानी शब्द (*kataleipo*) का अनुवाद ''छोड़ा'' और ''त्यागा'' ''छोड़ना'' का एक मज़बूत रूप है। इस वचन में इसका अर्थ त्याग देना है। (डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स क्म्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स* [नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 362.)